॥ अष्टलक्ष्मी स्तोत्रम् ॥

आदिलक्ष्मी

सुमनसवन्दित सुन्दरी माधवी चन्द्र सहोदरी हेममये ।
मुनिगणमण्डित मोक्षप्रदायिनी मन्जुळभाषिणी वेदनुते ॥
पञ्कजवासिनी देवसुपूजित सद्गुणवर्षिणी शान्तियुते ।
जयजय हे मधुसूदन कामिनी आदिलक्ष्मी सदा पालय माम् ॥ 1 ॥

धान्यलक्ष्मी

अयि कलिकल्मषनाशिनी कामिनी वैदिकरूपिणी वेदमये ।
क्षीरसमुद्भव मन्गालरूपिणी मन्त्रनिवासिनी मन्त्रनुते ॥
मन्गालदायिनी अम्बुजवासिनी देवगणाश्रित पादयुते ।
जयजय हे मधुसूदन कामिनी धान्यलक्ष्मी सदा पालय माम् ॥ 2 ॥

धैर्यलक्ष्मी

जयवरवर्णिनी वैष्णवी भार्गवी मन्त्रस्वरूपिणि मन्त्रमये ।
सुरगणपूजित शीघ्रफलप्रद ज्ञानविकासिनी शास्त्रनुते ॥
भवभयहारिणि पापविमोचनी साधुजनाश्रित पादयुते ।
जयजय हे मधुसूदन कामिनी धैर्यलक्ष्मी सदा पालय माम् ॥ 3 ॥

गजलक्ष्मी

जयजय दुर्गतिनाशिनी कामिनी सर्वफलप्रद शास्त्रमये ।
रथगज तुरगपदादि समावृत परिजनमण्डित लोकनुते ॥
हरिहर ब्रह्म सुपूजित सेवित तापनिवारिणी पादयुते ।
जयजय हे मधुसूदन कामिनी गजलक्ष्मी रूपेण पालय माम् ॥ 4 ॥

सन्तानलक्ष्मी

अयि खगवाहिनी मोहिनी चक्रिणी रागविवर्धिनी ज्ञानमये ।
गुणगणवारिधी लोकहितैषिणी स्वरसप्त भूषित गाननुते ॥
सकल सुरासुर देवमुनीश्वर मानववन्दित पादयुते ।
जयजय हे मधुसूदन कामिनी सन्तानलक्ष्मी सदा पालय माम् ॥ 5 ॥

विजयलक्ष्मी

जय कमलासनी सद्गतिदायिनी ज्ञानविकासिनि गानमये ।
अनुदिनमर्चित कुंकुमधूसर भूषित वासित वाद्यनुते ॥
कनकधरास्तुति वैभव वन्दित शन्कर देशिक मान्य पदे ।
जयजय हे मधुसूदन कामिनी विजयलक्ष्मी सदा पालय माम् ॥ 6 ॥

विद्यालक्ष्मी

प्रणत सुरेश्वरी भारती भार्गवी शोकविनाशिनी रत्नमये ।
मणिमयभूषित कर्णविभूषण शान्तिसमावृत हास्यमुखे ।।
नवनिधिदायिनी कलिमलहारिणी कामित फलप्रद हस्तयुते ।
जयजय हे मधुसूदन कामिनी विद्यालक्ष्मी सदा पालय माम् ।। 7 ।।

धनलक्ष्मी

धिमिधिमि धिन्धिमि धिन्धिमि धिन्धिमि दुन्दुभि नाद सुपूर्णमये ।
घुमघुम घुंघुम घुंघुम घुंघुम शन्खनिनाद सुवाद्यनुते ।।
वेदपुराणेतिहास सुपूजित वैदिकमार्ग प्रदर्शयुते ।
जयजय हे मधुसूदन कामिनी धनलक्ष्मी रूपेण पालय माम्।। 8 ।।